# बिहारी सतसई में लोकतत्व

*डॉ. भावना शर्मा

श्रृंगार रस में डूबी हुई सात सौ से अधिक दोहों वाली सतसई का निर्माण करने वाले महाकवि विहारी रीतिकाल के ऐसे कवि हैं जिन्होंने गागर में सागर भर दिया है। सामान्यतः रीतिकालीन साहित्य को एकांगी, समाज से पृथक अपनी ही संकुचित दृष्टि में रहने वाला और श्रृंगार को ही अपना एकमात्र लक्ष्य मानने वाला माना जाता रहा है और विहारी तो रसराज श्रृंगार के कुशल चित्रकार हैं और रससिद्व कवियों में अग्रमण्य हैं अतः उनकी रचनाओं में श्रृंगार की प्रधानता तो होनी ही चाहिये। यद्यपि रीतिकाल की रचनाओं का प्रधान भाव दैहिक सौंदर्य ही रहा है भावों की सहज मार्मिकता कम है परन्तु रीति रचनाओं को लोक तत्व विहीन कहना पूर्णतः अनुचित है क्योंकि उन्होंने जो लोक संस्कृति में देखा है वही अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। अतः रीतिसिद्ध रचनाओ को लोक संस्कृति से हीन नही कहा जा सकता है।

***1.''लोकस्य स्थावरजंठामात्मकलोव तस्य''*** साधारण अर्थों में हम जिस सामाज वातारण में रहते हैं उनका चित्रण लोकतत्व के अन्तर्गत आता है। विहारी इन चित्रों को उकेरने में कुशल रहे हैं। पतंगबाजी का खेल समाज में काफी प्रचलित रहा है। यह साधारण जनों के मनोरंजन का एक प्रमुख साधन रहा है। इस दोहे में वे पतंगबाजी के बहाने समाज की रीति दर्शायी गई है। ***2.'' दूरि भजत प्रभू पीठि दै, गुन विस्तारन काल। प्रगतत निर्गुन निकट, रहि चंग रंग भूपाल ।।'' 3*** गिरहबाज कबूतर की उडान का उल्लेख करते हुये वे कबूतरबाजी को प्रस्तुत करते हुये लिखते है **–3. '' ऊँचे चितै सराहियत, गिरह कबूतरू लेतु। झलकति द ग मुलकित बदनु, तनु पुलकित किंहि हेतु।। ''3** *धोड़े पर चढ़कर खेला जाने वाला चौगान बिहारी के युग में काफी प्रचलित खेल था जिसको प्रस्तुत करते हुये वे लिखते हैं। 4.''* ***सरस सुमिल चित तुरंग को करि–करि अमित उठान । गोई निवाहै जीतिये, खेलि प्रेमि चौगान ।।''4*** कहीं राजा और नबाबों के शिकार द्वारा मनोरंजन के दृश्य उपस्थित हैं। 5. '' खेलन सिखये अलिभलै चतुर अहेरीमार। काननचारी नैनम ग नागर नरनु शिकार ।। '' 5 तो कहीं आँख मिचौनी खेलते हुये नायक नायिका नजर आते हैं। 6. '' दोऊ चोर मिहीचनी खेल न खेलि अघात। दुरत हिऐ लपटाइ कै छुवत हिऐ लपटात।। '' 6 इसी तरह कहीं फिरकी घुमाने का खेल खेला जा रहा है। 7. '' नई लगनि कुल की सकुच विकल भई अकुलाई। दुहूँ और ऐंसी फिरति, फिरकी लों दिनु जाई ।। 7 तो कहीं फागुन के महीने में होली का त्यौहार मनाते हुये स्त्री पुरूषो के मध्य श्रृंगारिक चेष्टायें मन मोह लेती हैं – 8. '' पीठि दिये ही नैक मुरि कर घूंघट पटु डारि। भरिगुलाल की मूठि तिय, गई मूठि सींमारी।।'' विभिन्न प्रकार के फूलों का एक साथ वर्णन करते समय विहारी ने अपनी प्राकृतिक लोक दृष्टि का परिचय भी दिया है। एक ही दोहे में लपटइया, मोगरा, सोनजूही, कमल (निशिसेन) चंपा, वरणी, गुल्लाला, नैन (पंचनैना) आदि फूलों का वर्णन करते हुये विहारी ने मुडालंकार का सुन्दर भाव प्रस्तुत किया है।9. ***'' कत लपटइयतु मो गरै, सोन जुही निसि सैन। जा चंपक बरनी किए, गुल्लाला रंगनौ।।''*** 9 (सेंहुड कौसो आंकु) के द्वारा सेंहुड वृक्ष का, (सूरन महुंलागि) कहकर सूरण या जमीकंद का (जिये मतीरनु सोधि के) द्वारा मारवाड में होने वाले मतीरे या तरबूज का भी वर्णन किया है।

जनता में प्रचलित विश्वासों एवं मान्यताओं को भी विहारी छोड नही सके हैं इसीलिये (वाही त्यौ टहराति यह कविल नवीलो दीठि) कहकर उसकटोरी का वर्णन करते है, जो उस समय प्रायः किसी की चोरी का भेद खोलने के लिये पानी भरकर मंत्र द्वारा चलाई जाती थी तथा (छनकु–छवाई छवि गुर डरी छले छबीले छैल) के द्वारा उस अभिमंत्रित गुड की डली की ओर संकेत किया है जिसे दिखाकर ठगलोग किसी भी व्यक्ति को अपने पीछे–पीछे चलने के लिये बाद्ध कर देते थे और जंगल में ले जाकर लूट लेते थे। ज्योतिष में कहा जाता है कि मीन लगन में शनि राजयोग कारक है। ऐसे में नायिका मछली जैसी आँखो में काजल रूपी शनि को लगाती है और इस सुन्दरता से उत्पन्न प्रेम राजयोग में उत्पन्न होने के कारण उन्नति प्राप्त करेगा। शनि कज्जल चख–झख लगन, उपज्यो सुदिनसवेह। क्यो न न पति है भोगवै, लहि सुदेस सब देह।।'' 10 इसी तरह नरपतिजयचर्या नामक ज्योतिष ग्रन्थ लिखता है कि जब चंद्र मंगल, गुरू ग्रह किसी एक नाड़ी पर स्थित होते है तो भारी वर्षा होती है।

***11.'' एक नाडी समारूढौ, चंद्रमा धरणीसुतौ। यदितत्र भवज्जजीवस्तदैकार्णविता मही।।*** 11विहारी ने इसी ज्योतिष सिद्वांत को दोहे में प्रस्तुत किया है –

***12. '' मंगल विन्दु सुरंगमुख, ससि केसर आडगुरू। इकनारी लहि संगु, रसमय किय लोचन जगत।।''***

* शा. महाविद्यालय शम्साबाद शांति निलय बस स्टेण्ड नरसिंहगढ़, राजगढ

उसी तरह सूर्य जब एक राशि से दूसरी राशि में गती करता है तो इसके मध्य का काल संक्रातिकापूण्य काल कहा जाता है, उसी तरह किशोर और युवावस्था के मध्य के संक्रमणकाल वाली नायिका का यह पुण्पकाल है और जो उसे प्राप्त करेगा वह पुण्य प्राप्त कर लेगा। ***13. " तिय–तिथि तरूण किशोरवय, पुण्यकाल समदोनु। काहूं पुण्यनु पाइयतु वैसु संधि संक्रोनु।।"*** ***13*** इसी प्रकार (गहयो राहू अति आहू करि मनु ससि सूर समेत) कहकर सूर्य एवं चन्द्रग्रहन का उल्लेख भी विहारी करते हैं –तत्कालीन समाज में चिकित्सा का साधन आयुर्वेद ही था और आयुर्वेद की औषधियों के नुस्खे काफी लोकप्रिय थे। विहारी भी इन नुस्खे से परिचित थे। सुदर्शन चूर्ण विषम ज्वर (मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया) की एकमात्र अचूक औषधि है उसका परिचय भी विहारी ने दिया है।

***14. " यह विनसत नग राखि कै क्यों नसुजस जग लेहु। जरीविषमजुर ज्याइये आयसुदरसन देहु।।"*** 14 इसी तरह नपुंसकता नाश के लिये पारद चूर्ण (पारा) देने की बात वे कहते है – ***15. " बहुधन लै अहसानु कै पारो देत सराहि। बैद बधू हंसिभेद सौ रही नाह मुँह चाहि।।" 15***

जहां नपुंसक वैद्य पारा देकर मरीज से खूब धन लेते है और उनकी बात पर पत्नी हंस देती है। इसी तरह (पीनस बारै जो तज्यो सोरा जानि कपूर) के द्वारा पीनस रोग की चिकित्सा और (मैं लख नारी जानु में) नाडी परीक्षण की भीचर्चा उन्होंने की है।

***16. "दुसह दुराज प्रजानु को क्यों न बढें दुख दुन्द। अधिक अंधेरों जग करे मिलिमावस रवि चंद्र।।" 16*** समाज में प्रचलित अनुभवों को बहुत गहनता के साथ विहारी प्रस्तुत करते हुऐ लिखते हैं। किसी के बडे से बडे संबोधन देने से कोई बडा नही हो जाता जब तक उसमें गुण नहीं जैसे–

***17. " बडे न हूजै गुनन बिनु बिरद बडाई पाय। क्हत धतूरे सो कनक गहना गढयोन जाय।।" 17*** इसी प्रकार छोटे स्तर के व्यक्ति से बडे कार्य की उम्मीद करना व्यर्थ है जिस तरह चूहे की खाल से ढोल नही मढ़ा जा सकता है। ***18. " कैसे छोटे नरनु ते, सरत वढनु के काम। मढयो दमामा जा तज्यों कहि चूहे के चाम।।"18***

उसी प्रकार नीची गति वाले को कितनी ही उच्च पद दो अवसर पाने पर वह नीचे ही जाता है जैसे नल में पानी नीचे की ओर ही बह सकता है ऊपर नहीं। (दो. 341) और गुणहीन व्यक्ति को गुणी कह देने से वह गुणी नही हो सकता। जिस तरह अकौआ को अर्क कहने से वह सूर्य के समान प्रकाश नही कर सकता है। (351) इसी भांति जिसकी प्यास जिस जलस्त्रोत से बुझ जाये वही उसके लिये सागर है। भले ही सागर नदियां कितनी ही विशाल हों।***19. "अति अगाध अति ओथरो, नदी कूपसर बाय।/सो ताको सागर जहॉ, जाकी व्यास बुझाया।।" 19*** ऐसे ही समय के अनुसार ही व्यक्ति को मान मिलता है और जब अपनी आवश्यकता होती है तभी आदर किया जाता है जैसे वर्ष के कुछ दिनों में पितरों को तृप्त करने के लिये कौअे को आदर के साथ बुलाकर खीर पुडी का भोग लगाते है और वेचारा तोता राम–राम कहता हुआ भी पिंजरे में प्यासा मरता है। (दो. 435) बिहारी जन सामान्य में प्रचलित गणित की व्यवहारिक जानकारी से भी काफी परिचित थे।

***20." कहत सबै बैदी किऐ आंकु दस गुनौ होतु।/ तिय लिलार बैदिदिये अगिनितु बढतु उदोतु"।। 20***

इसी तरह जब किसी अंक के सामने या आगे टेढी लकीर खीचें तो वह रूपये के रूप में जाना जाता है उसी प्रकार नायिका के गीरेमुख पर नालों की टेढीलता उसके मुख को मूल्यवान संपत्ति बना देती है। ***21. "कुटिल अलक छुटिपरत मुख बढिगौइतौ उदोतु।/बंक बकारी देतज्यौं दाम रूपैया होतु।।" 21***

विहारी को इतिहास पुराणों की विस्त त जानकारी थी यह उनके अधिकांश दोहों से पता चल जाता है। ऋतुवर्णनों में उन्होंने उसी स्वाभाविकता का परिचय दिया है जो समाज में अनुभव की जाती है। लोक व्यवहार की नीतियो में तो उन्हें महारथ हासिल थी। उनका यह दोहा तो समाज का सर्वप्रचलित अनुभव है। ***22. "कनक कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय।/ या खाय बौरातु जन वा पाये वैराय।। "22***

यही नही खल प्रव त्ति के लोगो को पहले सम्मान देना सुरक्षित होता है इसका उदाहरण देखिये–

***23. " बसै वुराई जासु तन, ताही को सनमानु। /भलो भलो कहि छॉडिये, खोटे ग्रह जपुदानु।।" 23***

इंद्र धनुष के रंग संयोजन का विहारी का ज्ञान बताता है कि वे रंग संयोजन का विज्ञान की भी जानते है।

**24. " अधर धरत हरि केपरत ओठ दीठि पट जोति।/हरित बांस की बाँसुरी इंद्र धनुष रंग होति।।"24** यहॉ तीनों मूलरंगो से ही इंद्रधनुष के रंग निर्मित हो रहे हैं, कितनी सूक्ष्म दृष्टि है। बिहारी की। उनकी इन्ही विशेषताओं को सिद्ध करते हुए डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना लिखते हैं –

25. "विहारी सतसई में तत्कालीन जन जीवन का जीता जागता चित्र विद्यमान है तथा उसमें मानव की शाश्वत भावनाओं का साकार रूप अंकित है " 25 उपरोक्त समीक्षा के पश्चात् यह स्पष्ट है कि विहारी एक लोक सिद्ध कवि है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

1 काव्य प्रकाश मम्मट कवि । 2–10 तक सभी विहारी सतसई बिहारी कवि। 11 नरपहिजयचर्या 3/29 12–24 तक सभी विहारी सतसई –विहारी कवि। 25 हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सैना।